श्री अजित जिन पूजन

स्थापना

(संखी छंद)

श्री अजितनाथ पद वंदन, स्वीकारो मम अभिनंदन।
अति पुण्य उदय है आया, करने आया हूँ अर्चन।।
प्रभु आप स्वयं वैरागी, मैं तव चरणन अनुरागी।
है काल अनंत गंवाया, अब प्रीत प्रभु से जागी।।
मैं ध्याऊँ श्याम सवेरा, मेटो भव-भव का फेरा।
नहीं और लगाओं देरी, भक्तों ने प्रभुवर टेरा।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र!श्रीअजितनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(संखी छंद)

भवसागर डूब रहा हूँ, कर्मो से ऊब रहा हूँ ।
अब पार लगा दो नैया, चरणों में आन खड़ा हूँ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु बहुत लगाया चंदन, ना किया प्रभु पद वंदन।
यह भूल हुई प्रभु मुझसे, मेटो सारा दुख क्रंदन।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायभवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
पर को ही अपना माना, निज को खंडित पहचाना।
यह जग नश्वर है सारा, नहीं दिखता कहीं ठिकान।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।3।।

श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
यहाँ मोह की मदिरा पी है, अपनी ही सुध बिसरी है।
फिर दोष दिया है पर को, चेतन कलियाँ बिखरी हैं ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।4।।

श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
तृष्णा ने जाल बिछाया, मैं समझ नहीं कुछ पाया।
हो गया क्षुधा का रोगी, चरु औषध पाने आया।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।5।।

श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अज्ञान अँधेरा छाया, मिथ्यातम ने भरमाया।
निज घर को ही प्रभू भूला, नहीं दिखता चेतन राया।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।6।।

श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायमोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
हूँ स्वयं ही पर का कर्ता, मिथ्या भ्रम सारी जड़ता।
समकित की धूप मिले तो, सारे बंधन हर लेता ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।7।।
श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
निज सुख पलभर न पाया, सुख दुख फल में भरमाया।
शिव सुख फल रस का प्याला, अब जी भर पीने आया ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।8।।
श्रीअजितनाथजिनेन्दाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अबतक कई अर्घ्य चढ़ाये, प्रभु एक नहीं मन भाये।
वसु द्रव्य चढ़ा प्रभु आगे, यह दास चरण सिर नाये। ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा ।।9।।
श्रीअजितनाथजिनेन्दाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचकल्याणक
(ज्ञानोदय छंद)
कृष्ण अमावस ज्येष्ठ मास को, विजया माता हर्षाए ।
विजय विमान त्याग कर प्रभुजी, नगर अयोध्या में आए ।।1।।
ऊँ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म विजय करने वाले है, अतः अजित जिन नाम दिया।
माघ शुक्ल दशमी को जन्मे, पाण्डु शिला पर न्हवन किया ।।2।।
ऊँ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लौकांतिक देवों ने आकर, किया जगत में जय जयकार।
माघ शुक्ल नवमी को प्रभु ने, तप धारण का किया विचार ।।3।।
ऊँ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बारह वर्ष मौन रहकर फिर, पाया केवलज्ञान महान।
पौष शुक्ल एकादशी के दिन, दिया मुक्ति संदेश महान ।।4।।
ऊँ ह्रीं पौषशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कूट सिद्धवर पावन भू से, चौत्र शुक्ल पंचमी का काल।
अजितनाथ ने मोक्ष प्राप्त कर, सम्मेदाचल किया निहाल ।।5।।
ऊँ ह्रीं चौत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
ऊँ ह्रीं अर्ह श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।
जयमाला - दोहा
अजितानाथ के पद कमल, मैं पूजूँ धर प्रीत।
पर भावों से हे प्रभो हो जाऊँ अब रीत ।।1।।
(सखी छंद)
जय-जयश्री अजित जिनंदा, विजया माता के नंदा।
मैं शरण तिहारी आया, भव्यों के आप हो चंदा।।2।।
इंद्रिय मन पर जय पाई, बन गए आप मुनिराईं
प्रभु सार्थक नाम अजित है, हो गए आप जिनराई।।3।।

हुई समवसरण की रचना, झर रहें फूल सम वचना।
सब इंद्र देव भी नत हैं, प्रभु महिमा का क्या कहना।।4।।
प्रभुवर की ऐसी वाणी, यह जन-जन की कल्याणी।
कब पुण्य उदय मम आये, साक्षात् सुनूँ जिनवाणी ।।5।।
वसु प्रातिहार्य की गरिमा, तीर्थंकर प्रभु की महिमा।
निर्दोष परम अतिशाही, है चतुर्मुखी जिन प्रतिमा ।।6।।
प्रभु छियालीस गुण धारी, हैं अनंत गुण भंडारी।
हम अल्पमति किम गायें, चरणों में है बलिहारी ।।7।।
प्रभु आप वरी शिव नारी, मैं भटक रहा संसारी।
प्रभु निज सम मुझे बना लो, पा जाऊँ पद अविकारी ।।8।।
नहीं वचनों में कुछ शक्ति, बस हृदय बसी तव भक्ति।
बालक को ना ठुकराना, प्रभु देना अविचल मुक्ति ।।9।।
दोहा
अजित प्रभु की अर्चना, संचित दुरित पलाय।
दास खड़ा कर जोड़कर, नाशूँ सकल कषाय।।10।।
ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घत्ता
श्री अजित जिनेश्वर, हे परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।

श्री संभवनाथ जिन पूजन
स्थापना
(चौबोला छंद)
भव-भव हारी संभव जिन के, श्री चरणों में करूँ नमन।
निज चौतन्य विहारी जिनर, दूर करो मेरे बंधन।।
द्रव्य भाव नोकर्म रहित जो, सिद्धालय के वारी हैं।
मन मंदिर में आन विराजो, हम जिन पद अभिलाषी हैं ।।1।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।
द्रव्यार्पण
(तर्ज-नंदीश्वर श्री जिन धाम--)
पावन समता रस नीर, पाने में आया।
प्रभु जन्म मृत्यु को क्षीण, करने हूँ आया।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।1।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
समता रस चंदन नाथ, अब तक ना पाया
अब भवाताप का नाश, करने मैं आया।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।2।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अविनश्वर पद का नाथ, मुझको ज्ञान नहीं।

शब्दों से किया है ज्ञान, निज पहचान नहीं ।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।3।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
इंद्रिय के विषय जिनेश, मम मन को भाये।
निज शील रूप का दर्श, अब करने आये।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।4।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
तृष्णा का उदर विशाल, अब तक है खाली।
आनंद अमृत से आज, भर दो ये प्याली।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।5।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तिहुँलोक प्रकाशक ज्ञान, की पहचान नहीं।
छाया मिथ्या अज्ञान, निज का भान नहीं।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायमोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
इस कर्म शत्रु को नाथ, निज गृह में पाला।
मेरे ही धन को लूट, निर्धन कर डाला ।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायअष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
हो कर्म चक्र मम चूर्ण भाव बना लाया।
शिवमय रस से परिपूर्ण, फल पाने आया।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पर द्रव्यों की अभिलाषा, अब तक भायी है।
आतम अनर्घ्य की बात, नहीं सुहायी है।।
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हिकार, हे अंतर्यामी ।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(चौपाई)

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी प्यारी, मात सुसेना है अवतारी।
ग्रैवेयक से आये स्वामी, माथ नवाऊँ अन्तर्यामी।।1।।
ऊँ हीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा आयी,श्रावस्ती नगरी हर्षायी।
पांडु शिला अभिषेक किया है, तिहुँ जग में आनंद हुआ हैं ।।2।।
ऊँ हीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, परिग्रह तजकर दीक्षा धारी।

छेवों ने जयकार किया है, तव चरणों में नमन किया है।।3।।
ऊँ हीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कार्तिक कृष्ण चतुर्थी आई, केवलज्ञान लक्ष्मी पाई।
समवसरण की महिमा भारी, संभव जिन सबके हितकारी।।4।।
ऊँ हीं कार्तिककृष्णचतुथ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धवलकूट विख्यात हुआ है, अष्ट कर्म का नाश किया है।
चौत्र शुक्ल षष्ठी सुखकारा, मन वच तन से नमन हमारा।।5।।
ऊँ हीं चौत्रशुक्लषष्ठयां मोक्षमंगलमंडिताय केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
ऊँ हीं अर्हंश्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।
जयमाला
(स्रगिवणी छंद)
हे जिनेश्वर करूँ मैं सदा प्रार्थना।
आप सुन लीजिये भक्त की भावना।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना ।।1।।
सर्व ज्ञाता प्रभु हो विधाता प्रभो।
आज आया शरण पार कर दो विभो।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 2।।
अश्व का चिह्न पद पद्य में शोभता।
पुण्यं तीर्थेश का सर्व मन मोहता।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 3।।
एक दिन मेघ का नाश होते दिखां
सर्व वैभव तजा और संयम लखा।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 4।।
वर्ष चौदह किये मौन की साधनां
पा लिया ज्ञान केवल्य शुद्धातमा ।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 5।।
श्री समोसर्ण रचना करे धनपती।
नर पशु देव देवी औ आये यती।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 6।।
नाथ की दिव्य अमृत ध्वनि जब खिरे।
जैसे तरु से नितर ही सुमना झरें ।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 7।।
शक्ति से सिद्ध जाना है यह आत्मा।

जे चले राह शिवपुर हो परमात्मा ।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। ।।
हे प्रभु भक्त पे अब कृपा कीजिए।
नाथ तेरा ही हूँ मैं बचा लीजिए ।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 9।।
एक ही भावना 'पूर्ण' कर दीजिए।
नाथ संभव भवाताप हर लीजिए ।।
नाथ संभव करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।। 10।।
ऊँ हीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घत्ता
श्री संभव जिनवर, हे परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।